

बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट • देश में पहली बार गिटी रहित ट्रैक प्रणाली से बन रहा ट्रैक बेड सूरत में बुलेट ट्रेन के लिए 95-95 मीटर लंबे अप- डाउन ट्रैक बेड बनाए गए, इन्हीं पर ट्रैक स्लैब बनेगा

ट्रांसपोर्ट रिपोर्टर | सूरत

अहमदाबाद-मुंबई हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के लिए आरटी ट्रैक बेड बनाने का कार्य सूरत में शुरू हो गया है। अब तक अप और डाउन रेल लाइन के लिए 95-95 मीटर लंबे आरसी ट्रैक बेड बिछाए गए हैं। इसी ट्रैक बेड पर स्लैब ट्रैक और रेल लाइन बिछाई जाएगी। आरसी ट्रैक बेड (जैसे जापानी शिंकांसेन में उपयोग किए जाते हैं) बनाने के लिए पहली बार जे-स्लैब गिटी रहित ट्रैक प्रणाली का उपयोग किया जा रहा है। ट्रैक सिस्टम में एक प्री-कास्ट ट्रैक



स्लैब होता है, जिस पर फास्टनिंग डिवाइस और रेल लाइन फिट की जाती है। यह स्लैब आरसी ट्रैक बेड पर टिका होता है, जिसकी मोटाई लगभग 300 मिमी होती है। इसे वायाडक्ट टॉप पर अप और डाउन ट्रैक लाइंस के लिए बनाया जाता है। आरसी ट्रैक बेड की चौड़ाई 2420

मिमी है। आरसी एंकर का उपयोग ट्रैक स्लैब पर बाधाओं को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। आरसी एंकर की मोटाई 520 मिमी व्यास और ऊंचाई 260 मिमी होती है। इनका निर्माण एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक लगभग 5 मीटर की दूरी पर किया जाता है।

320 किमी प्रतिघंटे रफ्तार के लिए उपयुक्त आरसी एंकर

हाई स्पीड रेल प्रबंधन ने बताया कि आरसी एंकर में रेफेरेंस पिन लगाया जाता है, जिसका उपयोग 320 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार पर ट्रेन संचालन के लिए उपयुक्त स्थिति प्राप्त करने के लिए किया जाता है। गुजरात के लिए ट्रैक कार्यों के कॉन्ट्रैक्ट्स दिए जा चुके हैं। जापान से 14000 मीट्रिक टन से अधिक जेआईएस रेल्स और ट्रैक स्लैब कास्टिंग के लिए 50 मोल्ड पहले ही प्राप्त किए जा चुके हैं।

190 M. Long R.C. the track bed was laid

બુલેટ ટ્રેન: 190મી. લાંબો આરસી ટ્રેક બેડ નંખાયો

ભાસ્કર ન્યૂઝ | સુરત

મુંબઈ-અમદાવાદ હાઈસ્પીડ રેલ કોરિડોરમાં ટ્રેકનું કામ શરૂ કરવામાં આવ્યું છે. જેમાં અત્યાર સુધી અપ અને ડાઉન લાઈન માટે 190 મીટર લાંબો આરસી ટ્રેક બેડ નાખવામાં આવ્યો છે. જે પછી ટ્રેક બેડ પર સ્લેબ ટ્રેક અને રેલ નાખવામાં આવશે. અમદાવાદ મુંબઈ વચ્ચેના બુલેટ ટ્રેન પ્રોજેક્ટનું કામ પૂરજોશમાં ચાલી રહ્યું છે. ભારતમાં પહેલી વખત અને તે પણ સુરતથી જ જે-સ્લેબ બેલાસ્ટલેસ ટ્રેક બનાવાઈ રહ્યો છે. આખો ટ્રેક કોંક્રિટના બેડમાંથી બનાવાઈ રહ્યો છે. આ સિસ્ટમનો ઉપયોગ જાપાનની હાઈ-સ્પીડ રેલ સિસ્ટમ શિકાનસેનમાં કરાયો હોવાની માહિતી નેશનલ હાઈ સ્પીડ રેલ કોર્પો. લી.એ આપી છે.